पश्चिम एशिया में एक नए अरब स्प्रिंग की शुरुआत

लेखक - मोहम्मद अयूब (प्रोफेसर, अंतर्राष्ट्रीय संबंध, मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी)

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र-II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध) से संबंधित है।

द हिन्दू

25 नवंबर, 2019

लेबनान और इराक दूरगामी राजनीतिक परिवर्तन के शिखर पर प्रतीत होते हैं लेकिन दोनों देशों में हो रहे संघर्षों के अंतिम परिणाम पर किसी भी तरह की भविष्यवाणी करना जल्दबाजी होगी। पिछले कई हफ्तों से दोनों देशों में हो रहे अनवरत और विशाल सरकार विरोधी प्रदर्शन तीन स्पष्ट संदेश दर्शाते हैं। सबसे पहला, आम नागरिक भ्रष्ट सत्ताधारी कुलीनों से तंग आ चुका है जो सत्ता में बने रहने के लिए सभी प्रकार के युद्धाभ्यास में संलग्न हैं।

सांप्रदायिक विभाजन

दोनों देशों में कई दलों के अस्तित्व के बावजूद, सरकार का गठन गिने चुने नेताओं के बीच रह गया है। दूसरा, सांप्रदायिक विभाजन मुख्य रूप से संप्रदाय-आधारित पार्टियों और उनके नेताओं को चुनौती देने में शामिल होने वाले सभी संप्रदायों के सदस्यों के साथ टूट रहे हैं। तीसरा, विदेशी हस्तक्षेप के खिलाफ इराकी और लेबनानी आबादी के बीच विद्रोह है और विरोध आंदोलनों के परिणाम पश्चिम एशिया में शक्ति के संतुलन पर एक बड़ा प्रभाव डाल सकते हैं। यह इराकी और लेबनानी आंदोलनों के रणनीतिक महत्त्व को जोड़ता है।

1943 में देश की आज़ादी के बाद से लेबनान की राजनीति को भ्रमित और सांप्रदायिक आधार पर विभाजित किया गया है। सरकारी कार्यालयों के साथ-साथ संसद में प्रतिनिधित्व भी सांप्रदायिक कोटा के आधार पर वितरित किया जाता है। इसने पार्टियों और मिलिशिया को लेबनान की राजनीति में एक मजबूत मुकाम दिया। शिया राजनीति में हिज्बुल्लाह का वर्चस्व इस घटना का प्राथमिक उदाहरण है, लेकिन ईसाई और ड्रूज मिलिशिया भी इसी सिद्धांत पर काम करते हैं।

2003 के अमेरिकी आक्रमण तक दशकों से इराक क्रूर शासन के अधीन था। देश में राज्य संरचना को नष्ट करके अमेरिकी कब्जे ने सांप्रदायिक मिलिशिया और ऐसी पार्टियाँ पैदा कीं जिन्होंने अपने समुदायों के लिए सुरक्षा प्रदाता के रूप में काम किया और इस तरह सभी राजनीति को सांप्रदायिक राजनीति में बदल दिया।

लेबनान और इराक में मौजूदा विरोधी आंदोलन जो सांप्रदायिक सीमाओं से आगे बढ़ गया, यह दर्शाता है कि दोनों देश संप्रदायगत विभाजन को पार करने की ओर बढ़ रहे हैं और पारंपरिक स्वीकारोक्ति-आधारित नेतृत्व के नियंत्रण को मिटा रहे हैं। इस संभावित बदलाव का सबसे उल्लेखनीय उदाहरण शिया समुदाय के भीतर से ही हिज्बुल्लाह (जो दशकों से लेबनान में शिया राजनीति पर हावी है) को दी गई चुनौती है, लेकिन चुनौती हिज़बुल्लाह तक सीमित नहीं है।

सुन्नी प्रधानमंत्री साद हरीरी ने भी अपने सुन्नी घटकों का विश्वास खो दिया है और उन्हें कार्यवाहक क्षमता में जारी रहने के बावजूद इस्तीफा देने के लिए मजबूर किया गया है। मैरोनाइट राष्ट्रपति मिशेल एउन ऐसा करने के लिए अपने ईसाई निर्वाचन क्षेत्र से दबाव में हैं। इसी प्रकार, इराक की शिया बहुल सरकार अपने पूर्ववर्ती शिया समर्थकों के

क्रोध का सामना कर रही है। यहाँ तक कि मुक्तदा अल सद्र जैसे शिया नेताओं ने भी प्रधानमंत्री आदिल अब्दुल-महदी के इस्तीफे का आह्वान किया है जो पिछले इराकी चुनावों के बाद ईरान और संयुक्त राज्य अमेरिका दोनों का पसंदीदा विकल्प थे।

अंतर्राष्ट्रीय नतीजे

इन घटनाओं का एक प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय कोण भी है। अगर लेबनान और इराक में उथल-पुथल सफल रही तो सबसे बड़ा नुकसान ईरान को होगा।

हिज्बुल्लाह की अपने शिया घटकों के बीच विश्वसनीयता में कमी, जो लेबनान में बहुलता का निर्माण करते हैं, लेबनान में अपने प्रभाव को खोने के कारण ईरान में दोहराने की संभावना है, जिसे तेहरान इज़राइल और सीरिया में असद शासन को समर्थन प्रदान करने के लिए आवश्यक मानता है। ईरान के लिए रणनीतिक दृष्टि से इराक और भी महत्वपूर्ण है। 1980-88 के ईरान-इराक युद्ध के अपने खूनी अनुभव को देखते हुए, ईरान बगदाद में कम से कम सरकार बनाने का जोखिम नहीं उठा सकता है।

तेहरान ने जो चिंता जताई है वह यह है कि शिया बहुल इराकी सरकार के खिलाफ और ईरान के खिलाफ सबसे बड़े और सबसे विराट प्रदर्शनों में से कुछ खुद शिया बहुल शहरों और दक्षिणी इराक के शहरों में हुए हैं। शिया प्रदर्शनकारियों ने पवित्र शहर कर्बला में ईरानी वाणिज्य दूतावास पर हमला किया और उसमें आग लगाने का प्रयास किया। बगदाद में ईरान समर्थित सरकार के इस्तीफे के लिए इराकी प्रदर्शनकारियों की मांगों के समर्थन में इराकी शिया धर्मगुरु ग्रैंड अयातुल्ला अली अल-सिस्तानी के समर्थन ने ईरानी शासन को और भी उग्र कर दिया है।

इराक में ईरान-विरोधी प्रदर्शनों ने ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला खामेनेई को विरोध प्रदर्शन को बढ़ावा देने वाले विदेशी तत्त्वों को दोषी ठहराने के लिए प्रेरित किया है। ईरानी नेतृत्त्व उन्हें परमाणु और अन्य संबंधित मुद्दों पर अमेरिकी हुक्मनामा को स्वीकार नहीं करने के लिए ईरान को दंडित करने के प्रयास के रूप में देखता है।

तेहरान के पास कई उपकरण हैं जिनका उपयोग इराक में कट्टरपंथी परिवर्तन को रोकने के लिए कर सकता है जिनमें इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स द्वारा प्रशिक्षित शिया मिलिशिया भी शामिल हैं। हालाँकि, विरोधी आंदोलन को कुचलने के लिए इराकी सरकार द्वारा इन मिलिशियाओं की तैनाती ने उकसाया है और ईरान विरोधी भावनाओं को फैलाने का नेतृत्त्व किया है जो संप्रदायों की सीमा में कटौती करता है।

विरोधी आंदोलनों का भविष्य

इस सवाल का जवाब देना बहुत मुश्किल है कि क्या लेबनान और इराक में हो रहे विरोधी आंदोलनों में इतनी शक्ति है जो मौजूदा सत्ता को गिराने में सफल हो पाएँ। अब तक स्वत:स्फूर्त कार्रवाई के कारण विरोध जारी है।
इससे भी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि विरोधी आंदोलनों, उनके अनाकार और सहज स्वभाव को देखते हुए इराक या लेबनान के सुसंगत शासन संरचनाओं के संदर्भ में व्यवहार्य विकल्प प्रदान कर सकता है। यदि विरोधी आंदोलन वर्तमान शासन के लिए दीर्घकालिक विकल्प प्रदान करने में सफल होते हैं तो वे पश्चिम एशिया के लिए एक गैर-संप्रदाय और लोकतांत्रिक भविष्य की शुरुआत की पहल करेंगे। यदि वे विफल हो जाते हैं तो अरब दुनिया उसी दुविधापूर्ण स्थिति में बनी रहेगी जिसमें वह पिछले कई दशकों से फँसी हुई है।

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. इराक के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

   1. वर्तमान समय में लेबनान और इराक के बीच चल रहे राजनीतिक परिवर्तन से लेबनान ज्यादा प्रभावित होगा।
   2. इराक की शिया बहुल सरकार वर्तमान में पूर्ववर्ती शिया समर्थकों के रोष का सामना कर रही है।

   उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

   (a) केवल 1
   (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों
   (d) न तो 1, न ही 2

Expected Questions (Prelims Exams)

1. **Consider the following statements in the context of Iraq:-**

   1. Lebanon will be most affected by the recent political transition happening between Iraq and Lebanon.
   2. Shia majority government of Iraq is presently facing the rage of former shia supporters.

   Which of the above statements is/are correct?

   (a) Only 1 (b) Only 2
   (c) Both 1 and 2 (d) Neither 1 nor 2

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्रश्न: पश्चिम एशिया देशों में सरकार के विरूद्ध एक नई विरोध प्रदर्शनों की शृंखला एक नए अरब स्प्रिंग का विस्तार प्रतीत हो रही है। आपके अनुसार क्या ये विरोध प्रदर्शन अरब स्प्रिंग के समान परिणाम उत्पन्न कर सकेंगे? टिप्पणी कीजिए। (250 शब्द)

A series of new protests against the governments in West Asian countries seems to be an extension of a new Arab Spring. According to you, will these protests produce results similar to the Arab Spring? Comment. (250 words)

नोट : 23 नवम्बर को दिए गए प्रारंभिक परीक्षा (संभावित प्रश्न) का उत्तर 1 (c) होगा।